B.A Part I
Paper III

By:-
Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh College Siwan

5.5.20

कल्याण अर्थशास्त्र (Welfare economics)

कल्याण एक मानसिक स्थिति है जो मानवीय प्रसन्नता एवं संतुष्टि की द्योतक है। सच्चाई में कल्याण मानवीय मानसिक स्थिति की एक प्रसन्न अवस्था है। प्रमुख अर्थशास्त्री पीगू सामाजिक कल्याण को आर्थिक कल्याण आर्थिकेत्तर कल्याण (Non economic welfare) में बाँटता है। आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा में मापा जा सकता है। क्योंकि कल्याण बहुत विस्तृत शब्द है, इसलिए पिगू आर्थिक कल्याण को ही महत्व प्रदान करता है। इनके शब्दों में "हमारी जाँच की सीमा सामाजिक (सामान्य) कल्याण के उस भाग तक सीमित हो जाती है जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर से मुद्रा के माप दण्ड के साथ मापा जा सकता है।"

इसके विपरित आर्थिकेत्तर कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसे मुद्रा में मापा नहीं जा सकता है। जैसे नैतिक कल्याण।

परन्तु आर्थिक एवं आर्थिकेत्तर कल्याण में मुद्रा के आधार पर भेद करना ठीक नहीं। पीगू भी इस बात को स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार आर्थिकेत्तर कल्याण को दो प्रकार से संशोधित किया जा सकता है। प्रथम आय के अर्जित करने के तरीके से। काम करने के अधिक घण्टे व खराब हालात आर्थिकेत्तर कल्याण को कम कर देंगे। दूसरे आय के व्यय करने के ढंग से। आर्थिक कल्याण में यह मान लिया जाता है कि भिन्न-भिन्न उपभोग वस्तुओं पर किए गए खर्च समान संतुष्टि प्रदान करते हैं, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। क्योंकि जब शराब आदि वस्तुओं से संतुष्टि कम होता है तो आर्थिकेत्तर कल्याण कम होता है जिससे कुल कल्याण में भी कमी आ जाती है। परन्तु पीगु का यह

p.T.O

विचार है कि ऐसे प्रभावों की गणना करना संभव नहीं होगा, क्योंकि आर्थिकेतर कल्याण को मुद्रा द्वारा मापा नहीं जा सकता, इसलिए अर्थशास्त्री को इस मान्यता पर चलना चाहिए कि आर्थिक कारणों का प्रभाव जो आर्थिक कल्याण पर पड़ता है वह कुल कल्याण पर भी लागू होता है। अतः पीगू इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आर्थिक कल्याण बढ़ने से कुल कल्याण में भी वृद्धि होती है और उसकी कमी से कुल कल्याण में कमी होती है।

परन्तु ऐसा सदैव संभव नहीं क्योंकि जो साधन आर्थिक कल्याण में वृद्धि करते हैं वे आर्थिकेतर कल्याण को भी कम कर सकते हैं। इसलिए कुल कल्याण में वृद्धि अनुमान से कम हो सकती है। जैसे, आय बढ़ने में आर्थिक कल्याण एवं कुल कल्याण दोनों बढ़ते हैं और आय कम होने से वे कम होते हैं। परन्तु आर्थिक कल्याण केवल आय की मात्रा पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि आय के अर्जित करने और उसके व्यय करने के ढंग पर भी निर्भर करता है। जब पुरुष कारखानों में काम करके अधिक आय कमाते हैं, पर गन्दी बस्तियों और दूषित वातावरण में रहते हैं तो उनका आर्थिक कल्याण चाहे बढ़ा हो लेकिन कुल कल्याण में वृद्धि नहीं मानी जाती है। इसी प्रकार उनका व्यय की आय के अनुसार बढ़ने से कुल कल्याण में वृद्धि नहीं मानी जा सकती, यदि वे शराब, सिगरेट आदि हानिकारक वस्तुओं पर बढ़ी हुई आय व्यय करते हैं। अतः आर्थिक कल्याण का कुल कल्याण निर्देशक नहीं हो सकता।